रुहानी बच्चों को तो अब निश्चय है कि हमको आत्म-अभिमनी बनना है। और बाप को याद करना है। माया रूपी रावण जो है वो श्राप देकर दुखी बना देते है। श्राप अक्सर ही दुख का है। वर्सा अक्सर सुख का है। जो बच्चे वफादार फरमानबरदार है वो अच्छी रीती जानते है। जो नां फरमानबरदार है वो बच्चा है ही नही। भल वो अपने को कुछ भी समझे परन्तु बाप के दिल पर वो चढ़ा हुआ नही है। बाप से वर्सा पा नही सकते है जो कि बाप के कहने पर नही चलते है माया के कहने पर चलते है किसको किसको समझा नही सकते है। गोया अपने को आपही श्रापित करते है। बच्चे जानते है कि माया बड़ी जबरदस्त है। अगर बेहद के बाप की भी नां मानते है तो गोया रावण की मानते है। माया के वश हाँ जहाँ है। गायन है नां प्रभु की आज्ञा सिर माथे... तो जो माथे पर नही मानेंगे तो बाकी रहा श्राप। वो तो कुछ काम का नही रहा। इसलिये ही पहले-2 बाप कहते है कि बाप को याद करो तो माया की गोद में जो पड़े हुये हो फिर उनसे निकल कर प्रभु की गोद में जाना है। बाप बुधी वालों का भी बुधीवान है। बाप की नां मानेंगे तो बुधियों को ताला लग जावेगा। ताला खोलने वाला एक बाप ही है। श्रीमत पर नां चलेंगे उनका क्या हाल होगा। माया की मत पर कुछ भी पद पा नही सकेंगे। भल सुनते है परन्तु धारणा नां कर सकते है तो उनका क्या हाल होगा। बाप तो गरीब निवाज़ है। मनुष्य गरीबों को दान देते है। तो बाप भी आकर कितना बेहद का दान करते है। अगर श्रीमत पर नां चलते तो एकदम बुधी को ताला लग जाता है। फिर क्या प्राप्त करेंगे। श्रीमत पर चलने वाले ही बाप के बच्चे ठहरें। बोर्ड भी लगा हुआ है कि जो आज्ञाकारी वफादार नही होंगे उनको बाहर निकाला जावेगा। बाप तो रहम दिल है। समझते है कि बाहर जाने पर माया एकदम खत्म कर देगी। कोई आपघात करते है तो भी अपनी सत्यानाश कर लेते है। बाप तो समझाते रहते है कि अपने पर भी रहम करो। श्रीमत पर चलो अपनी मत पर नां चलो। श्रीमत पर चलने से खुशी का पारा चढ़ेगा। नही तो जैसे मुर्दे। ल-न की सूरत देखो कितनी खुशमिजाज है। कितने मनुष्य इनको दीदार करने जाते है। दर्शन करना भी कितना मुश्किल हो पड़ता है। डंडे मारते रहते है। तो पुरुषार्थ कर ऐसा ऊँच पद पाना चाहिये नां। बाप अविनाशी ज्ञान रत्न देते है तो उनका अनादर क्यों करना चाहिये। रत्नों से झोली भरनी चाहिये। सुनते तो है परन्तु झोली नही भरते है क्योंकि बाप को याद ही नही करते है। आसुरी चलन चलते है। बाप बार-2 समझाते रहते है कि अपने पर रहम करो। दैवी गुण धारण करो। वो है ही आसुरी सम्प्रदाय। शैतानी राज्य है। उसको बाप आकर परिस्तानी बनाते है। परिस्तान स्वर्ग को कहा जाता है। मनुष्य कितने धक्के खाते रहते है सन्यासियों के पास कि मन को शान्ति कैसे मिले? वास्तव में यह अक्षर ही रांग है। इसका कोई अर्थ नही है। शान्ति तो आत्मा को चाहिये नां। आत्मा खुद शान्त स्वरूप है। ऐसे भी नही कहते है कि आत्मा को शान्ति कैसे मिले? कहते है मन को शान्ति कैसे मिले? अब मन क्या है बुधी क्या है आत्मा क्या है कुछ भी नही जानते है। जो कुछ कहते है अथवा करते है वो सब है भक्तिमार्ग। भक्ति मार्ग वाले है ही रावण राज्य वाले। सीढ़ी नीचे उतरते-2 तमोप्रधान बन जाते है। भल किसको बहुत धन प्राप्ति आद है परन्तु है तो फिर भी रावण राज्य में ही नां। वो राम राज्य में तो चल नही सकते है। राम राज्य में चलना है तो चलन भी अच्छी ही चाहिये। दैवीगुण चाहिये। श्रीमत पर चलना चाहिये। बहुतों को माया थप्पड़ मार कर एकदम अक्ल चट कर लेती है। बाप समझा जाते है कि यह आज्ञाकारी फरमानबरदार नही बनते है तो जैसे कि पूरे रैप्स है। मढ़ूंते ही नही है। शक्ल मनुष्य की है परन्तु सीरत तो जैसे कि बन्दरों की, शैतान जैसी है। तुम्हारी सीरत देवताओं जैसी बनावेंगे अगर श्रीमत पर चलो तो। बाप बार-2 समझाते रहते है कि बाप को याद करो तो अक्ल आती रहेगी। चित्रों पर समझाने की भी बहुत अच्छी सर्विस करनी है। बाप सभी सेन्टर्स के बच्चों को समझाते रहते है। फर्स्ट क्लास सेकण्ड क्लास, थर्ड क्लास बनेंगी तो है नां। कई बच्चे राजाई पद पाने पुरुषार्थ नही करते है तो [illegible] जा

मैं भी क्या पद पावेंगी। बिलकुल सर्विस ही नही करते है। अपने पर ही तरस ही नही आता है कि हम क्या करेंगी। फिर समझा जाता है कि इनका ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है। ज्ञान की धारना नही करते है। अपना कल्याण ही नही कर सकते है तो दूसरो का क्या करेंगे। कल्याण तब कर सकते है जब कि खुद पहले योग में हो। ज्ञान तो बहुतसहज है। परन्तु अपना कल्याण भी तो करना है नां। योग में नां रहने से कुछ भी कल्याण होता नही है। योग बिगर पावन कैसे बनेंगे। ज्ञान अलग है योग चीज ही अलग है। योग से पावन बनना है ऊंच पद पाना है। योग में बहुत कच्चे कच्चे है।याद करने का अक्ल नही आता है। याद बिगर विकर्म विनाश कैसे हो। फिर सजा बहुत खानी पड़ती है। बहुत पछताना पड़ता है। वो लोग कमाई नही कर सकते है तो कोई सजा नही खानी पड़ती है। इसमें तो पापो का बोझा सिर पर है इससे तो बहुत सजा खानी पड़े। बच्चे बन कर फिर अगर बेअदब होते है तो बहुत सजा मिल जाती है। बाप तो कहते है अपने पर रहम कर योग में रहो। नही तो मुफत अपना ही घाटा करते हो। समझे कोई मरने के लिये गिरते है परन्तु मरते नही है तो हास्पिटल में पड़ा चिल्लाता रहेगा कि नाहक ही गिरा। नाहक ही अपने को घायल किया। मरा भी नही। क्या काम का रहा। यहा भी ऐसे ही है चढ़ना है बहुत ऊंच। श्रीमत पर नही चलते है तो गिर पड़ते हैआगे चल कर हर एक अपने पद को देख लेंगे किहम क्या बनते है। जो सर्विसकुल आज्ञाकारी होंगे वो ही तो ऊंच पद पावेंगे। नही तो दास-दासियां आद जाकर बनेंगी। सजा भी बहुत बड़ी मिलेगी। उस समय तो दोनो जैसे कि धर्मराज का रूप बन जाते है। परन्तु बच्चे समझते नही है। भूले करते ही रहते है। जैसे जेल में जाने वाले इन्जाय भी करते है कि हम फिर भूल नहीकरेंगे म... फिर भूल करते रहते है फिर जेल में जाते रहते है। यहां पर भी ऐसे ही है। सजा तो यहां पर खानी पड़ेगी नां। जितनी जो सर्विस करेंगे वो होवेंगे। नही तो कोई काम के नही रहेंगे। बाप कहते है कि अगर दूसरे का कल्याण नही कर सकते हो तो अपना तो करो। कन्हैलियाँ भी अपना कल्याण करती रहती है नां। लिखते है बाबा हम आपको बहुत याद करते है। और कोई को अब याद नही करेंगे। कई तो फिर ऐसी भी बच्चियां है तो जो किअपना घर छोड़ कर फिर दूसरे पुरुषो पिछाड़ी फिरती रहती है गन्दी होने के लिये।उनका फिर क्या मान रहेगा। ब्राह्मण बच्चे तो उनको देखेंगे भी नही। इसलिये ही बाप कहते ह है कि खबरदार रहो। नाम रूप में फसने से माया बहुत धोखा देती है। लिखते है बाबा फलाने को देखने से खराब संकल्प आते है। बापकहते है संकल्प तो आवेंगे ही परन्तु कर्मणा से कोई खराब काम नही करना। किनारा कर लो। उनसे बचते रहो।ऐसे भी बहुत आते है लिखते है तो बाबा कहते है कि फलाने को सेन्टर पर आने नही देना।खबरदार रहना है। गन्दा आदमी सेन्टर पर आ नही सकते है बाबा पहले ही इतलाह दे देते है। उनको आने नही देना है। आपस में मिल कर उनको भगा देना है। समझ होनी चाहिये। डायरेक्शन मिलता है नां। उनको आने नां देना है। बैठने नही देना है। स्कूल में पढ़ाना नां पढ़ाना तो अपने
****
हाथ में है। बदचलन वाले को रख कैसे सकते है। स्कूलो में छोकरे बदचलन चलते है तो बहुत मार खाते है। सबकी सामने टीचर बताते है कि इसने ऐसी बदचलन की। इसलिये इनको स्कूल से निकाला जाता है। सबके सामने सजा दे भगा देते है। तुम्हारे सेन्टर्स पर भी ऐसी-2 गन्दी-2 दृष्टी वाले आते हो तो उनको भगा देना चाहिये।बाप कहते है कब भी कुदृष्टी नां रखनी है। सर्विस जो नही करते है जरूर कुछ नां कुछ गन्दे है। यो तो बाप को यादनही करते है। जो अच्छी सर्विस करते है तो उनका नाम भी बाला होता है। थोड़ा भी संकल्प आवे वां कुदृष्टी जावे तो समझ जाना चाहिये कि मेरे पर माया का वार हो रहा है। एकदम छोड़ देना चाहिये। नही तो वृधी को पाकर खराब कर देंगे। बाप को याद करेंगे तो बचते रहेंगे। और दैवी गुण धारन करने है। कभ-2 कोई ब्रह्मचारी बैठती है तो वो अवस्था नही रहती है। बाबा को तो सबको समझाना पड़ता है। सेन्टर चलाते भी ऐसे-2 काम करते है जो कि बात मत पूछो। बाबा लिख